अमृतवेले 5 बजे 11/5/68 ओमशान्ति आत्माभिमानी हो?

अमृतवेले के समय शिवबाबा के ब्रह्मा मुख द्वारा अनमोल महावाक्यः–

जो शिव के पुजारी हैं वह हाथ उठावे। इस जन्म में अनुभव क्या करते हैं? जो शिव की पूजा करते तो कब ऐसा दिल में आता था कि शिवलिंग को (ला)कर भाकी पहनें। प्यार किया जाता है ना। मालूम है ..... प्यार किया जाता है? इसमें क्या होता है कि हम जाक(र) शिवबाबा को प्यार करें। ऐसी कशिश होती है? प्यार कैसे करें। जब बाप कोई शरीर में हो। प्यार की कशिश तो होती है; परन्तु प्यार कैसे कर सकते हो। तो कह सकते हैं ओ बाबा। बाप कहेंगे ओ बेटे। गीत है तुम्हीं से सुनूँ, तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से सभी कुछ लूँ..... अभी जानते हो कि बाबा से ज्ञान लेते हैं। कितनी निश्चय बुद्धि चाहिए तो बाबा को याद करें। फिर या(द) बिगर विकर्म विनाश नहीं हो सकते। बाबा बच्चों को कहते हैं जो बच्चे सुनते हैं तो वह कहते हैं हाँ बाबा के याद बिगर विकर्म विनाश हो नहीं सकते। वही पतित–पावन है जो बच्चे–2 कहते रहते हैं। कितना दू..... आते हो। क्या साधु के पास? सन्यासी के पास? किसके पास आये हो। जो मुझे याद करते हैं मैं भी उनको ..... याद करता हूँ; क्योंकि वह पावन बनते जाते हैं और जैसे मैं ज्ञान का सागर हूँ वैसे वह भी बनते जाते ..... भला वह कौन है जो सृष्टि के आदि मध्य, अंत का नॉलेज सुनावे। मूल बात है याद की। इसको योग कहा जाता है। अभी बाप स्वयं आत्माओं को कहते हैं कि बाप को याद करो। याद करो। जो तमोप्रधान बन पड़े हैं ..... प्रधान बनेंगे। यह ज्ञान है कि हम बाबा से राज–भाग पावेंगे? हम बाबा के साथ घर जावेंगे। पढ़ाते हैं सभी बस और तो कोई बातें याद नहीं करनी चाहिए। अच्छा टाइम हो गया है बच्चों का। वहां बैठ कर थकते .... जब बैठ कर थकते हैं तो फिर बाप के साथ चक्र लगाते हैं। बाप को ज़रूर याद करना है। उठते हैं बैठते ..... वह क्या कहते हैं बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। याद करो, याद करो अभ्यास करो तो ..... जावेंगे। सभी दुःखों से बेड़ा पार हो जावेगा और कल्प–2 तुम्हारा बेड़ा पार होगा। तो बेड़ा पार करने वाले को नहीं भूलना चाहिए। बाप ऐसे तो नहीं कहते हैं एक जगह बैठो। उठते–बैठते बाप को याद करो। घर ..... कहां आते हो। याद करते हो चिट्ठी लिखते हो शिवबाबा के पास जाते हैं। इसमें यह नोट्स आदि भी ..... कर दरकार नहीं। मनुष्य तो लिखते हैं। कलम–पुसिल (पेंसिल) तो जन्म–जन्मांतर उठाई। अभी इसकी ज़रूरत है क्या .... 84 जन्मों के राज़ को समझ कर बाप से मिले। अभी लिखने का रहा ही क्या है। बहुत लिखा। बहुत पढ़ा। तो सभी भूल जाने का है। यहां क्या रखा है। पावन दुनियां में रखा है या शान्तिधाम में कुछ रखा है या दुनियां में कुछ रखा है। तो शान्तिधाम और सुखधाम को याद करो। यहां क्या रखा है। दूसरी सभी बातें जो की है सभी भूल जाओ। देह सहित सभी कुछ भूलकर बस एक बाप के साथ घर जाना है। घर जाना है। (यह) याद रखना। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।